(1)

महाराष्ट्री प्राकृत साहित्य :

महाराष्ट्री प्राकृत साहित्य को 6 वर्गों में विभाजित किया गया है।

(I) महाकाव्य : महाराष्ट्री / प्राकृत महाकाव्यों की संख्या – 6 (छह) है। यथा–

(i) कविवर प्रवरसेन कृत सेतुबंध
(ii) वाक्पतिराज कृत गउडवहो (गौड़वध)
(iii) आचार्य हेमचन्द्र कृत कुमारवाल (कुमारपाल)
(iv) कवि कौउहल कृत लीलावई
(v) श्री कृष्ण लीला शुक विरचित श्रीचिन्ह काव्य
(vi) श्री कण्ठ कृत शौरिचरित

(II) खण्ड काव्य :

महाराष्ट्री खण्ड काव्य की संख्या 2 (दो) है। यथा-

(i) रामपाणिवाद कृत कंसवहो (कंसवध)
(ii) रामपाणिवाद कृत उषानिरुद्ध

(III) चरितकाव्य :

महाराष्ट्री चरित काव्य की संख्या अनेक हैं। यथा—

(i) आचार्य विमलसूरि कृत पउमचरियं (पद्मचरित या रामचरित)
(ii) धनेश्वर सूरि कृत सुरसुन्दरी चरियं
(iii) लक्ष्मण गणि कृत सुपासनाह चरियं
(iv) श्री चन्द्रप्रभ महत्तर कृत सिरि विजयचंद केवली चरियं
(v) नेमिचन्द्र सूरि कृत महावीरचरियं, रयणचूडराय चरियं
(vi) देवेन्द्र सूरि कृत सुदंसणा चरियं, अनन्तनाह चरियं
(vii) अनन्त हंस कृत कुम्मापुत्तचरियं, कण्हचरियं
(viii) गुणपाल मुनि कृत जंबू चरियं
(ix) श्री शीलाचार्य कृत चउप्पन महापुरिसचरियं
(x) देवभद्र या गुणचन्द्र गणि कृत सिरि पासनाहचरियं
(xi) सोमप्रभ सूरि कृत सुमतिनाह चरियं
(xii) वर्द्धमान सूरि कृत आदिनाह चरियं, मनोरमा चरियं
(xiii) जिनेश्वर सूरि कृत चंदप्पहचरियं
(xiv) गुणचन्द्र सूरि कृत महावीर चरियं (गद्य-पद्य शैली)

(IV) महाराष्ट्री चम्पू काव्य :

महाराष्ट्री चम्पू काव्य की संख्या 1 (एक) है।

यथा – (i) उद्योतन सूरि कृत कुवलयमाला

Scanned with OKEN Scanner

शौरसेनी प्राकृत जैनागम साहित्य:

केवल दिगम्बर परम्परा में शौरसेनी प्राकृत आगम साहित्य मान्य है।

शौरसेनी प्राकृत भाषा में जो भी जैनागम साहित्य की रचना हुई है, वह शौरसेनी प्राकृत जैनागम साहित्य है। दिगम्बर परम्परा के आचार्यों एवम् प्राकृत भाषा विदों ने शौरसेनी प्राकृत भाषा में अनेक प्रकार की ग्रन्थों की संरचना की, परन्तु उनमें से जो उपलब्ध हैं, वे इस प्रकार हैं:—

(1) आचार्य पुष्पदंत एवम् भूतबलि कृत षट्खण्डागम
(2) आचार्य गुणधर कृत कषाय प्राभृत (कसाय पाहुड)
(3) आचार्य कुन्दकुन्द कृत पँचास्तिकाय, प्रवचनसार, समयसार, नियमसार, रयणसार, अष्टपाहुड, बारह अनुप्रेक्षा, भक्तिसंग्रह
(4) आचार्य यतिवृषभ त्रिलोक प्रज्ञप्ति (तिलोय पण्णत्ति)
5. वट्टकेर कृत मूलाचार
6. आचार्य शिवार्य कृत भगवती आराधना
7. स्वामिकार्तिकेय कृत कार्तिकेयानुप्रेक्षा
8. आचार्य नेमिचन्द्र कृत 'गोम्मटसार', त्रिलोकसार लब्धिसार, क्षपणासार एवं द्रव्यसंग्रह
9. आचार्य सिद्धसेन कृत सन्मतिसूत्र
10. उमास्वाति कृत श्रावकप्रज्ञप्ति
11. आचार्य हरिभद्र कृत 'श्रावकधर्मविधि
12. आचार्य वसुनन्दि कृत उपासकाध्ययन, वसुनन्दिश्रावका(चार) इत्यादि

(ख) शौरसेनी शिलालेखी प्राकृत साहित्य:

शौरसेनी शिलालेखी साहित्य की संख्या - (3) तीन है

(i) सम्राट अशोक का सहस्तम्भलेख एवम् चौदह शिलालेख
(ii) सम्राट खारवेल का हाथीगुम्फा शिलालेख
(iii) सम्राट कक्कुक का घटयाल प्रस्तर शिलालेख

(ग) शौरसेनी सट्टक साहित्य:

प्राकृत भाषा में रचित सट्टक (नाटक) साहित्य की संख्या - 6 (छह) है:—

(i) कविराजशेखर कृत कर्पूरमंजरी
(ii) मार्कण्डेय कृत विलासवती
(iii) रुद्रदास कृत चन्द्रलेखा
(iv) घनश्याम कृत आनन्दसुन्दरी
(v) विश्वेश्वर कृत शृंगारमंजरी
(vi) नयचन्द्रमुनि कृत रम्भामंजरी

Scanned with OKEN Scanner